एक पत्र देशवासियों के नाम

अशफाक
१६ सितंबर, १९२७
फैजाबाद जेल

मेरे प्यारे देशवासियो,

भारत माता को आजाद करवाने के लिए रंगमंच पर हम अपनी भूमिका अदा कर चुके हैं । गलत किया या सही, हमने जो भी किया, स्वतंत्रता पाने की भावना से प्रेरित होकर किया । हमारे अपने निंदा करें या प्रशंसा, लेकिन हमारे दुश्मनों तक को हमारी हिम्मत और वीरता की प्रशंसा करनी पड़ी है । कुछ लोग कहते हैं कि हमने गुलामी को न सहा और देश में आतंकवाद फैलाना चाहा, पर यह सब गलत है । हमारे कितने ही साथी आज भी आजाद हैं, फिर भी हमारे किसी साथी ने कभी भी किसी नुकसान पहुँचाने वाले तक पर गोली नहीं चलाई । यह हमारा उद्देश्य नहीं था । हम तो आजादी हासिल करने के लिए देश भर में क्रांति लाना चाहते थे ।

सरकार भी अंग्रेजों की और जज भी अंग्रेजों के, फिर न्याय की माँग किससे करें ! जजों ने हमें निर्दयी, बर्बर, मानवता पर कलंक आदि विशेषणों से पुकारा है । हमारे शासकों की कौम के जनरल डायर ने निहत्थों पर गोलियाँ चलवाईं । बच्चों, बूढ़ों, स्त्री-पुरुषों– सब पर दनादन गोलियाँ दागी गईं । तब इंसाफ के इन ठेकेदारों ने अपने भाई-बंधुओं को किन विशेषणों से संबोधित किया था ! फिर हमारे साथ ही यह सलूक क्यों ?

हिंदुस्तानी भाइयो ! आप चाहे किसी भी धर्म या संप्रदाय के मानने वाले हों, देश के काम में साथ रहो । आपस में व्यर्थ न लड़ो । रास्ते चाहे अलग हों, लेकिन उद्देश्य तो सबका एक है । सभी कार्य एक ही उद्देश्य की पूर्ति के साधन हैं । एक होकर देश की नौकरशाही का मुकाबला करो । अपने देश को आजाद कराओ ।

देश के सात करोड़ मुसलमानों में मैं पहला मुसलमान हूँ जो देश की आजादी के लिए फाँसी पर चढ़ रहा हूँ, यह सोचकर मुझे गर्व महसूस होता है ।

सभी को मेरा सलाम । हिंदुस्तान आजाद हो । सब खुश रहें ।

आपका भाई,
अशफ़ाक

फाँसी के तख़्ते पर चढ़ने से तीन दिन पहले अशफाक उल्ला खान ने यह पत्र लिखा । फाँसी के तख्ते पर चढ़ते हुए वे जोर से बोले, ''मैंने कभी किसी आदमी के खून से अपने हाथ नहीं रंगे । मेरा इंसाफ खुदा के सामने होगा ।''

शब्द-अर्थ

रंगमंच - अभिनय स्थल
आतंक - भय, उपद्रव
कलंक - दोष, लांछन
कौम - जाति, वंश
संप्रदाय - पंथ, मार्ग, कोई विशेष मत
भूमिका - योगदान, शुरुआत
बर्बर - क्रूर
शासक - शासन करनेवाला
निहत्था - बिना हथियार के

अभ्यास

बोध-विचार :

१. अंग्रेज भी स्वतंत्रता सेनानियों की प्रशंसा क्यों करते थे ?
२. यह पत्र इतिहास की किस घटना की ओर संकेत करता है ?
३. अंग्रेजों ने स्वतंत्रता सेनानियों को क्या कह कर पुकारा ?
४. अशफाक को किस बात का गर्व था ?
५. फाँसी पर चढ़ते हुए उन्होंने क्या कहा ? और क्यों ?

भाषा-ज्ञान :

१. नीचे दिये गये शब्दों से भाववाचक संज्ञाएँ बनाओ :

क्रिया	भाववाचक संज्ञा
उतार	उतराई
धो	.....
सींच	.....
चढ़	.....
पढ़	.....

२. नीचे लिखे शब्दों के सही उच्चारण करो :

स्वतंत्रता , त़ख्ता, क्रांति, बर्बर, शासक, उद्देश्य

मूल शब्द से बने अन्य शब्दों को जानो :

मूलशब्द –सेना -

उससे बने शब्द –सैनिक, सेनापति, सेनानी, सेनाध्यक्ष

३. कुछ मूल शब्द नीचे दिये गये हैं । उनसे बने अन्य शब्दों को लिखो :

तंत्र, भाव, शासन

४. 'उत्साह' में 'ई' प्रत्यय जुड़कर 'उत्साही' बना है । नीचे लिखे शब्दों में इसी प्रकार 'ई' प्रत्यय जोड़कर नये शब्द बनाओ :

विरोध, आजाद, दुश्मन, जिम्मेदार, गुलाम, विद्रोह

५. रिक्त स्थान भरो :

क. आपस में ———— न लड़ो ।

ख. अपने देश को ———- कराओ ।

ग. एक होकर देश की नौकरशाही का ——- करो ।

घ. हम तो आजादी ——- करने के लिए ——— में क्रांति लाना चाहते थे ।

ङ. मेरा इंसाफ——— के सामने होगा ।

अनुभव विस्तार :

१. ऐसा ही एक पत्र अपने मित्र को लिखो । नीचे रूप-रेखा दी जा रही है उसे लिख कर पूरा करो :

२०५, निराला नगर
लखनऊ
१५ अप्रेल - २००८

प्रिय मित्र रमेश ,

नमस्कार ।

.....

.....

.....

.....

.....

तुम्हारा मित्र,
कैलास